



प्रसिद्ध लेखक दीपक चोपड़ा से मुलाकात करते हुए दादी जानकी जी।



फिल्म अभिनेता चिरंजीवी व उनकी धर्मपत्नी सुरेखा जी से मिलते हुए दादी जानकी जी।



प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता ऋतिक रोशन को रक्षासूत्र बांधते हुए दादी जानकी जी।



मुलाकात के दौरान प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री ग्रेसी सिंह के साथ दादी जानकी जी।



फिल्म अभिनेत्री वैजयन्ती माला के साथ दादी जानकी जी।



दादी जानकी जी को रशिया में गोल्डन स्टार्टिफिकेट से सम्मानित किया गया।



- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हरीजा

एक तरफ बाबा कहते हैं 'इच्छा मात्रम अविद्या', दूसरी तरफ है, इच्छा बिगर योग नहीं लगता। इसका क्या मतलब है? किन इच्छाओं की अविद्या हो? यह जो संसार है, इसके पदार्थों की इच्छा, इसके व्यक्तियों की इच्छा, भोग के पदार्थों की इच्छा, तृष्णा जो पहले से हमारे में रही हुई है, इनकी अविद्या। जितनी इन भौतिक इच्छाओं की अविद्या होगी उतनी हमारे योग की गुणवत्ता होगी। योग की हमारी इच्छा जितनी प्रबल होगी उतनी इन दुनियावी इच्छाओं की अविद्या होगी। वरना संसार के प्रति हमारा आकर्षण होगा, संसार के पदार्थों को प्राप्त करने की इच्छा रखेंगे। जितना हम उनकी तरफ भागेंगे, उतना हमारा योग कम लगेगा और उतना हम योगी जीवन से दूर होते जायेंगे। जब हमारे में यही एक इच्छा होगी कि हमें बाप समान बनना है, और कुछ नहीं चाहिए तब योग लगेगा। बाबा ने सुनाया है कि हम में कौन-सी इच्छायेँ होनी चाहिए, और कौन-सी नहीं होनी चाहिए। योग की इच्छा इतनी तीव्र हो कि वह लगन का रूप ले ले। बाबा कहते हैं योग अग्नि और लगन को भी कहते हैं अग्न है। इसलिए इच्छा की यह लगन जितनी तीव्र होगी, उतनी योग की अग्न भी तीव्र होगी। हमारी इच्छा इतनी तीव्र हो कि मैं ऊंचे दर्जे का योगी बनूँ। मेरा मन बाबा में टिका रहे, मैं उस आनन्द रस को पीता रहूँ, मेरा सब भोग-विलास समाप्त हो जाये। मेरा मन कौए की तरह इस संसार रूपी कचड़े पर बैठना छोड़कर, अब हंस बन जाये। अब मैं परमात्मा के ज्ञान मोती चुगता रहूँ। जैसे चात्रक पक्षी के लिए कहा है कि स्वाति नक्षत्र की बारिश की बूंद पीकर उसको मोती बना देता है, वैसे मैं भी बाबा से ज्ञानामृत पीता रहूँ। अब मुझे शिव बाबा मिल गया, अब मेरा मन शिव बाबा में रमजा है। मैं उसी में मग्न रहूँ। यही मेरी एकमात्र इच्छा हो।

योग में मग्न अवस्था निर्भर है लगन पर, लगन निर्भर है इच्छाओं पर। इच्छा क्या है? हमारे मन का सम्बन्ध कईयों से लगा हुआ है, कई वस्तुओं में आसक्ति है, आकर्षण है, उसी का नाम सामूहिक रूप से इच्छा है। कुछ न कुछ वहाँ से चाहिए, उनसे कुछ उम्मीद रखी हुई है। कुछ सहारा, कुछ आधार वहाँ का लिया हुआ है। मन को उन सबसे निकाल कर एक तरफ लगाना है। इसी को मन्मनाभव कहते हैं।

योगविद्या, जिससे सारे पुरुषार्थ सम्पूर्ण हो जाते

मन्मनाभव भी कैसे होंगे? जब हमारी इच्छा यही होगी कि मुझे एक बाप को याद करना है, उसी से ही सब कुछ पाना है। एक परमपिता परमात्मा, दूसरा न कोई, यही इच्छा शक्ति का दूसरा नाम है।

दूसरा है, विचार शक्ति, संकल्प शक्ति। योग क्या है? श्रेष्ठ संकल्पों की स्मृति। हमारे ये संकल्प हैं याद के संकल्प। इन संकल्पों में और कोई संकल्प मिश्रित नहीं होंगे। ऐसा नहीं, एक संकल्प आ गया कि मैं आत्मा हूँ, दूसरा आ गया कि मैं एक डॉक्टर हूँ, मुझे डिस्पेंसरी में जाना है। तो हमारा योग कैसे लगेगा? योग करने के

हमारे निश्चयात्मक संकल्प हों ताकि हम अनुभव कर सकें।

तीसरी है, विवेक शक्ति जिसको हम निर्णय शक्ति कहते हैं। जब तक हमारा सद्विवेक जाग्रत न हो, हमने निर्णय न किया हो कि यह संसार अब विनाश होने वाला है। यह नरक बन चुका है, यह आसुरी संसार है, यह तमोप्रधान हो चुका है, यह निःसार हो चुका है और हमको जाना है सतयुग की ओर जहाँ सुख का भण्डार है, हमको जाना है वापिस घर, समय आ चुका है, तब तक हम योग की गहराई में जा नहीं सकते, अनुभव कर नहीं सकते। मम्मा हमेशा

दादी जानकी जी को यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्सास, यू.एस.ए. द्वारा 'मोस्ट स्टेबल माइंड' के टाइटल से नवाजा गया।



लिए बैठ गये, योग करना आरम्भ किया उतने में याद आया कि अरे, आज तो मुझे रसोई में जाकर खाना बनाना है। यह योग नहीं हुआ। योग है जिसमें एक संकल्प की धारा होती है। धारा में अन्तर नहीं होता, निरन्तरता होती है। तेल की धारा में अन्तर नहीं होता, तेल की बूंद एक से एक मिली हुई रहती है। निरन्तर गिरता रहता है। ये जो हमारे संकल्प हैं एक से एक जुटे हुए हैं, आत्मा के, परमात्मा के, परमधाम के, स्वधर्म के, स्वस्थिति के। इनके बारे में ही हमारे संकल्प हों, दूसरे संकल्प कोई न आये। ये शक्तिशाली संकल्प हों, अखण्ड संकल्प हों, निश्चयात्मक संकल्प हों। योग का दूसरा नाम ही निश्चय है। 'मैं आत्मा हूँ' यह सिर्फ संकल्प नहीं है, यह निश्चय है, इसमें मैं निश्चयात्मक रूप में स्थित होता हूँ कि मैं आत्मा हूँ। जब हम निश्चयपूर्वक संकल्प करेंगे तभी अनुभव होगा। अगर किसी को योग में अनुभव नहीं होता है माना उसने योग में जो भी संकल्प किया, निश्चयात्मक संकल्प नहीं किया अर्थात् उसके संकल्पों में निश्चय नहीं था। इसलिए योग में

यही सुनाती थी कि समय अपना फैसला दे रहा है, भगवान अपना फैसला दे रहा है, अब तुम भी अपना फैसला करो कि करना क्या है। जब तक कोई मनुष्य अपने जीवन में अन्तिम निर्णय नहीं लेता, तब तक कार्य पूर्ण रूप से आरम्भ नहीं होता। अगर होता भी है तो ठीक ढंग से नहीं होता। जिसका मन अस्थिर होगा, हिलने-डोलने वाला होगा वह व्यक्ति खुद ही मूँझा हुआ होगा कि क्या करूँ, क्या न करूँ, क्या सही है, क्या गलत है। इसलिए जिसका जितना प्रबल निर्णय है, जिसमें जितना यह विवेक जाग्रत हो चुका है, जिसमें ये ज्ञान की बातें ठोस रीति से बैठ गयी हैं, आप देखेंगे उसमें योग की पराकाष्ठा भी उतनी ही रहेगी। जिस दिन उसके मन में बाबा के बारे में, आत्मा के बारे में या और किसी ज्ञान के विषय में संशय होगा, आप देखेंगे उस दिन उसकी स्थिति डांवाडोल होगी। इसलिए सशक्त योग के लिए हमारी विवेक शक्ति अथवा निर्णय शक्ति भी अटल हो। योग में अनुभव करने के लिए हमारी इच्छा शक्ति, विचार शक्ति, निर्णय शक्ति साथ देंगी।



दादी जानकी जी को गीतम यूनिवर्सिटी, विशाखापट्टनम द्वारा डॉक्टरेट की उपाधि से नवाजा गया।



दादी जानकी जी को भारत सरकार द्वारा 'स्वच्छ भारत अभियान' के ब्रांड एम्बेसडर के रूप में नियुक्त किया गया।



जनरल बिपिन रावत, चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ से मिलते हुए दादी जानकी जी।



आध्यात्मिक कार्यक्रम में सम्मिलित हुए तत्कालिन माननीय प्रधानमंत्री एच.डी. देव गौड़ा जी व पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह जी। साथ हैं दादी प्रकाशमणि जी, दादी हृदयमोहिनी जी, दादी जानकी जी तथा अन्य।